षष्ट अध्याय

'प्रिय शबनम' : भाषा-शैली

षष्ट अध्याय

'प्रिय शबनम !' : भाषा-शैली --

६:१ भाषा -

६:१:१ भाषा का स्वरूप --

भाव-विचार संप्रेषण के लिए योग्य भाषा की प्रभावपूर्ण प्रयुक्ति आवश्यक होती है। प्रत्येक रचनाकार उपयुक्त भाषा के माध्यम से ही अपने कथा को प्रभावशाली ढंग से संप्रेषित करने की कोशिश करता है। भाषा के सैध्दान्तिक पक्ष के सम्बन्ध में यह कहना अनुचित न होगा कि सफल भाषा वही होती है जो उपन्यास की कथा,काल और पात्रों के अनुरूप हो। उसमें स्थानीय मुहावरों और लोकोक्तियों का भी यत्र-तत्र उपयोग हो, जिसमें उसकी प्रवाहशीलता नष्ट न हो। परिवेश में होनेवाले परिवर्तन के साथ-साथ भाषा के स्वरूप में भी बदलाव आता है। भाषा में अन्य गुणों के अविर्भाव के लिए सजग शब्दावली का प्रयोग और भावानुकूलता होनी चाहिए। सामान्य वर्णन कथोपकथन या अन्य प्रसंगों के अनुसार भाषा के स्वर में भी न्यूनाधिक परिवर्तन किया जा सकता है।

उपन्यास के पात्रों के मन में उठनेवाले अन्तर्द्वन्द्वों को व्यक्त करने के लिए छोटे-छोटे एवं स्वतंत्र वाक्यों का प्रयोग,सीधी यथार्थपरक भाषा के साथ-साथ व्यंग्यात्मक-भाषा-महत्वपूर्ण होती है। परन्तु इसमें प्रकृति के चित्रों का अभाव-सा परिलक्षित होता है। वास्तव में भाषा वह महत्त्वपूर्ण तत्त्व है जिसके माध्यम से किसी भी रचना में सार्थक अनुभवों की पहचान की जा सकती है। विकलांग भाषा किसी उपन्यास के कथा को न तो समर्थ बना सकती है,न किसी संवेदनशीलता की प्रतीति ही दिल सकती है। वह मानवीय सन्दर्भों को कोई सार्थक संज्ञा भी नहीं

दिला पाती । अपनी सूक्ष्मता,पैनेपन एवं काव्यात्मक व्यंजनाओं से ही उपन्यासों की भाषा आज अर्थवान हो सकती है ।

६:१:२ शब्द-प्रयोग के विभिन्न रूप --

' प्रिय शबनम ' उपन्यास में भाषा सम्बन्धी विविधता मिलती है । शब्दों के विविध स्वरूपों का विधान भाषा में सौन्दर्य लाने के लिए विविध उपकरणों का प्रयोग,मुहावरों और कहावतों की समन्विति वाक्यों की कलात्मक योजना तथा भाषा की युगानुरूप अभिव्यक्ति आदि के कारण देवेश ठाकुर के उपन्यासों की भाषा में सहजता और सौन्दर्य की प्रभोज्ज्वलता अनायास ही परिलक्षित होती है। ' प्रिय शबनम ' की भाषा में एक ओर नायक मंगल के मन में उठनेवाले अन्तर्द्वन्दों और उनसे उत्पन्न खंडित प्रतिक्रियाओं को छोटे-छोटे स्वतंत्र वाक्यों में अभिव्यक्त करने की अदभूत शक्ति है,तो दूसरी ओर हिमालय के मनोरम पहाडी सौन्दर्य के शब्दचित्रों में बांधने की सामर्थ्य भी । पात्रानुकूल,सूक्ष्म सांकेतिक एवं पैनेपन से भरी भाषा अपने कथा को संप्रेषित करने में पुरी तरह सक्षम है । जहाँ तक शब्द-प्रयोग का संबंध है इनके उपन्यासों में खड़ी बोली के ही शब्द नहीं है बल्कि पात्रों उनकी परिस्थितियों, अनुभूतियों एवं विचारों के अनुरूप देश-विदेशी आदि समस्त स्त्रोंतों से शब्दों का चयन हुआ है । शब्द प्रयोग के विविध स्वरूपों का अनुशीलन इन शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है ।

६:१:३ तत्सम शब्द --

' प्रिय शबनम ' उपन्यास में उन क्षेत्रों के पात्रों की स्थिति के अनुकूल भाषा का प्रयोग लेखक की विशेषता रही है । इसी कारण इस उपन्यास के पात्र अपनी योग्यता के अनुसार तत्सम शब्दों का उपयोग करते है । इस उपन्यास में प्रयुक्त कुछ तत्सम शब्द यहाँ प्रस्तुत है --" वाचाल,अप्रत्याक्षित,अन्यथा,औचित्य, अह्लादकारी ,आभिजात्य,दोहन,नैसर्गिक,हिमस्नान,आत्महन्ता ।" १

६:१:४ तद्भव शब्द --

देवेश ठाकुर ने ' प्रिय शबनम ' उपन्यास में तद्भव शब्दों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में किया है। परिणामस्वरूप इस उपन्यास की भाषा जनजीवन की भाषा बन गई है। इनमें कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग भी हुआ है जो विशेषत: ग्रामीण क्षेत्रों में बोले जाते हैं -- " बाड़, बटोरना, टोहना। " [२]

इसके अतिरिक्त कुछ ग्रामीण क्रियाओं का प्रयोग भी किया है जो सामान्यत: खड़ी बोली में प्रयुक्त नहीं होती। जैसे -- " बतिया रहे थे, बाट जोहना " । [३]

६:१:५ विकृत शब्द -

' प्रिय शबनम ' में लेखकने विकृत शब्दों का प्रयोग स्थानीय परिवेश एवं परिस्थिति विशेष का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए किया है। जैसे -- " चरित्तर, पवित्तर, बहिना, रमायन, कुलछनी, मेहतारी, जिनावर " । [४]

६:१:६ बम्बइया हिन्दी के शब्द --

' प्रिय शबनम ' उपन्यास की केन्द्रभूमि बम्बई रही है। देवेश ठाकुर ने विशेष परिस्थितियों में शुध्द हिन्दी का विकृत रूप बम्बईवासी पात्रों का आभास दिलाने के लिए बम्बई में प्रचिलत शब्दों का प्रयोग करके सहज स्वाभाविक चित्र खींचे हैं। जैसे " इत्ता, इस्तीसी, साब, मास्साब " । [५]

६:१:७ मराठी के शब्द --

उपन्यास की केन्द्रभूमि बम्बई है। बम्बई मराठी भाषिक राज्य की राज्यभाषी होने के कारण मराठी के कुछ शब्दों का उपयोग भी मिलता है। जैसे -- " खोली, पगडी " । [६]

६:१:८ विदेशी शब्द --

देवेश ठाकुर ने 'प्रिय शबनम' उपन्यास में अरबी, फारसी तथा अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है। इन शब्दों के उपयोग से कहीं भी दुरुहता नहीं दिखाई पड़ती, बल्कि यह कहना अत्युक्ति न होगी कि भाषा में सहज प्रवाह लाने के प्रयास में इन शब्दों का महत्त्वपूर्ण योग बन पड़ा है।

६:१:८:१ अरबी शब्द --

"मदरसा, फजीहत, गफर, शहादत।" ७

६:१:८:२ फारसी शब्द --

"शह, शोर, शराबे, जश्न, जवाब देह"। ८

६:१:८:३ अँग्रेजी शब्द --

'प्रिय शबनम' में अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में किया है। देवेश ठाकुर के सभी उपन्यासों का परिवेश बम्बई महानगर से सम्बन्धित रहा है। इस महानगरीय परिवेश और वातावरण को जीवन्तता प्रदान करने में लेखक की यह अँग्रेजी भाषा अत्यन्त सार्थक बन पड़ी है। अँग्रेजी के कुछ शब्द देखिए --"कॉटेज, स्टूडेन्टस, यूनियन, फेडरेशन, कॉम्प्लैक्स, लन्च बॉक्स, प्रूफ-रीडींग, स्टाफ-रूम, पोस्ट ऑफिस"। ९

अँग्रेजी शब्दों के साथ कहीं कहीं आधा वाक्य अँग्रेजी और आधा वाक्य हिन्दी का भी प्रयुक्त हुआ है --

"एक फोर्थ ईयर की स्टूडेंट न'। १०

"शी हेज लास्ट हर मदर (इसकी माँ नहीं रही)" ११

६:१:८:४ अँग्रेजी के विकृत शब्द --

पात्रों की योग्यता एवं परिस्थिति विशेष के अनुरूप अँग्रेजी के शब्दों का विकृत रूप भी प्रयोग में लाया गया है। जैसे --"टेम्परेरी, परोगराम, फिटन"। १२ इन शब्दों का प्रयोग पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ लोग भी करते हैं।

६:७:९ द्विरुक्त शब्द --

भाषागत सौन्दर्य की अभिवृध्दि के लिए द्विरुक्त शब्दों का प्रयोग 'प्रिय शबनम' में प्रयुक्त हुआ है और वे शब्द भाषा को सौन्दर्य पूर्ण एवं सहज प्रवाहशाली बनाने में सहायक बन पड़े हैं। जैसे --" पकी-पकी, पसीने-पसीने, शत-शत, अनेक-अनेक, पूरा-पूरा, सुबह-सुबह, बाँचते-बाँचते, प्रहर-प्रहर" । [१३]

६:१:१० ध्वन्यार्थक शब्द --

' प्रिय शबनम' में भाषा को सहजता प्रदान करने के लिए देवेश ठाकुर ने कुछ ध्वन्यार्थक शब्दों का भी सुन्दर प्रयोग किया है। उदा." हँसने की ध्वनि, हा-हा-हू-हू', ही-ही, थूकने की ध्वनि थू-थू ।" [१४]

६:१:११ अप शब्द --

' प्रिय शबनम ' में कहीं-कहीं अपशब्दों का प्रयोग मिलता है। पात्रानुकूल भाषा का निर्माण करने के लिए इन शब्दों का प्रयोग आवश्यक प्रतीत होता है। जैसे --" डायन, स्साली, नखरेबाज " । [१५]

६:१:१२ नये रचित शब्द --

शब्दों को नया अर्थ देने की दृष्टि से देवेश जी ने नये रचित शब्दों का प्रयोग 'प्रिय शबनम ' में किया है। जैसे --" बिजली के लट्टू, पुरुषपन, ऐकान्तिक, अनापी, हवाईपन " । [१६]

६:१:१३ भाषा-सौन्दर्य के विविध उपकरण --

रचना की सार्थकता भावों एवं विचारों की सफल एवं आकर्षक अभिव्यक्ति में ही निहित होती है। इसी कारण स्वातन्त्रोत्तर उपन्यासकारों ने अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभावशाली बनाने के लिए नये-नये विशेषणों, उपमानों, रूपकों संबंधी विविध प्रयोग किये हैं। देवेश जी ने भी 'प्रिय शबनम ' उपन्यास में इन सभी का प्रयोग किया है।

६:१:१३:१ विशेषण --

' प्रिय शबनम ' में नये-नये विशेषणों का अविष्कार काफी मात्रा में देवश जी ने किया है । उनमें से कोई भी शब्द अनावश्यक रूप में ठूँसा हुआ या असंगत नहीं प्रतीत होता - " बदहवास बेचैनी, खिली हुई उदासी, उजला सान्निध्य " । [१७]

६:१:१३:२ रूपक --

देवेश ठाकुर ने भावों के सफल संप्रेषण हेतु नये रूपकों का निर्माण एवं प्रयोग 'प्रिय शबनम ' में किया है जो उनकी सजग भाषा का प्रमाण है --

" उंगलियों के पारदर्शी पोर, सुख की गली, कमजोर क्षण, सस्ता पाखण्ड " । [१८]

६:१:१३:३ उपमान --

देवेश ठाकुर ने भाषा-सौन्दर्य की अभिवृध्दि हेतु कुछ नये उपमानों का प्रयोग ' प्रिय शबनम ' में किया है, जो अत्यन्त सार्थक एवं सटीक लगता है ।

" लैसडाउन-घास की हरी थालीपर सूरजमुखी के दीपसा लैस डाऊन " । [१९]

" कन्धों तक लटकी हुई सुनहरी नोंकवाली तुम्हारी सुगन्ध केश-राशि और केतकी के फूलोंसी गुलाबी आभावाली बाँहे " । [२०]

६:१:१४ शब्द-शक्तियाँ --

देवेश ठाकुर ने ' प्रिय शबनम ' में भावाभिव्यक्ति को अधिक सार गर्भित बनाने के लिए अभिधा के साथ-साथ लक्षणा और व्यंजना का प्रयोग भी किया है । इनके माध्यम से भाषा अपने कथा की अभिव्यक्ति में और भी समर्थ हो सकी है । जैसे -- " होटल में खाने का बिल भी तो चुकाना पडता है कि नही " । [२१]

" घर से लडकर आदमी होटल में खाना खा लेता है । " [२२]

६:१:१५ प्रतीकात्मकता --

देवश जी ने ' प्रिय शबनम ' में स्थान-स्थानपर प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग करके गूढ एवं रहस्यमय विषयों को सहज स्वाभाविक ढंग से अभिव्यक्त किया है ।

" मास्साब होटल में खाने का बिल भी तो चुकाना पड़ता है कि नहीं ।"[२३]
यहाँ ' होटल का बिल ' लाजो द्वारा आस्था के जनने का प्रतीक है ।

" तुमने ही महसूस कराया था कि दुनिया बहुत बड़ी है, कि जिन्दगी के अनेक स्तर है और एक परम्परागत दृष्टि और जीवन से चिपके रहना उस बन्दरिया के आदर्श को स्थापीत करना है जो अपने मरे हुए बच्चे को भी अपनी छाती से चिपकाये रखती है ।" [२४]

यहाँ ' बन्दरिया... मरे हुए बच्चो को अपनी छाती से चिपकाना मंगल के साथ जूड़े कॅम्प्लेक्स का प्रतीक है ।

६:१:१६ बिम्ब --

माधा के सौन्दर्य को आकर्षक बनाने के लिए देवेश ठाकुर ने ' प्रिय शबनम ' में बिम्बों का सृजन किया है । जैसे --

" जंगलों की छोटी-छोटी पगडंडियाँ झरना बन जाती थी ।" [२५]
" हृदय के सम्मिलन का नाम ही तो ब्याह है ।" [२६]
" गणित में ऋण और ऋण मिलकर धन बन जाते है लेकिन जीवन में ऋण और ऋण ही रहते हैं ।" [२७]

६:१:१७ मुहावरें और कहावतें --

देवेश ठाकुर ने ' प्रिय शबनम ' में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग नये अर्थबोध की शक्ति से सम्पन्न करके प्रयुक्त किया है । इसी के कारण भाषा सजीव, प्रभावशाली एवं विदग्धतापूर्ण बन पड़ी है ।

मुहावरें -- " निहाल होना, साँप सूंघना, तीर मारना, तू-तू मैं-मैं करना " । [२८]
कहावतें -- " सौ-सौ चूहे खाय के... गीता बाँचेगी ।" [२९]
" लव ऐट फर्स्ट साइट " । [३०]

६:१:१८ सुक्तियाँ --

देवेश ठाकुर का जीवन संघर्षों के उतार-चढाव से पूर्ण रहा है। इस संघर्षमय जीवन से प्राप्त खट्टे - मीठे अनुभव उनके उपन्यास ' प्रिय शबनम ' में सुक्तियों के रूप में उभरा है।' प्रिय शबनम ' में सुक्तियों की अधिकता मिलती है --

" मेरे सुख की गली थोडी देर के बाद हमेशा अँधेरे कोनों की ओर मुड़ जाया करती है।" ३१

" सम्मान का सम्बन्ध व्यक्ति की प्रतीमा, उसकी ईमानदारी और अछाई के साथ जुडना चाहिए।" ३२

" मानसिक्ता को बदलना पुनर्जन्म लेना होता है।" ३३

" बड़ी चीज के लिए बड़ी कीमत चुकानी पडती है।" ३४

" सफलता की माप यह नहीं कि तुमने जिन्दगी में कितना पाया, सफलता की माप यह है कि तुमने कितना दिया।" ३५

" जिन लोगों ने गरीबी को भाग्य के साथ जोड़ा है, वे ही गरीबों के सबसे बडे दुश्मन है।" ३६

६:१:१९ वाक्य-विन्यास --

' प्रिय शबनम ' में परम्परागत व्याकरण सम्मत वाक्य-विन्यास में परिवर्तन करके उन्हें नये अर्थबोध के साथ में देवेश जी ने प्रयुक्त किया है। हिन्दी व्याकरण के परम्परागत वाक्यविन्यास से कहीं भी मेल न खानेवाले वाक्य तथा शब्दों का रूप विकृत हो जाता है। कर्ता के लिए वचन के अनुसार ही क्रिया नहीं होती जैसे --

" उसका बाप क्या करता है रे।" ३७

कहीं कर्ता-विहीन वाक्य प्रयुक्त हुये हैं तो कहीं कर्ता का प्रयोग वाक्य के अन्त में किया गया है --

" तुम्हारे लिए कमजोर हो गया था मैं।" ३८

" फ्लैट छोटा ही सही है बहुत अछी जगह पर "। ३९

कई स्थानोंपर हिन्दी वाक्य का अंग्रेजी में तथा कहीं अंग्रेजी का हिन्दी में अनुवाद दुबारा प्रयुक्त हुआ है --

" यू वोन्ट बिलीव... तुम यकीन नहीं करोगे " ।[४०]

" वर्गीय अभिजात्य भी बड़ी हल्की, बहुत चीप चीज होती है ।" [४१]

लेखक के पास भाषा बड़ी सधी हुई है । छोटे-छोटे वाक्यों में कथन सामयिक शैली में यत्र-तंत्र दर्शनीय है । बिना क्रिया के वाक्यों में स्थिति-चित्र प्रस्तुत करने में लेखक सिध्दहस्त है । यथा" वसई में नाली के पास एक अँधेरी खोली । जुहू का यह कमरा । पहनने लायक दो-चार कपडे । पढ़ने की एक पुरानी मेज । दो टूटी हुई कुर्सियाँ और दस-पाँच किताबें ।" अथवा" तुम्हारे पिता नगर के एक बड़े एडवोकेट... और मेरा बाप ट्रक ड्राइवर । और बाप भी ऐसा कि जिसे बाप कहने का मौका भी यदाकदा ही मिला हो ... देशी शराब की बू.... आँखे चढी हुई मुँह खुला हुआ । सारा शरीर धूल से लथपथ... हथेलियों में गट्टे पड़े हुए ।" [४२]

६:१:२० मनोवैज्ञानिक शब्दावली --

देवशा जी के उपन्यास मनोवैज्ञानिक नहीं है परन्तु उपन्यास में कहीं-कहीं मनोवैज्ञानिक शब्दावली मिलती है । ' प्रिय शबनम ' में नायक मंगल के हीनता भाव को ज्यादातर इस शब्दावली में अंकित किया है । जैसे --

" यह भी जिन्दगी है क्या ? कूड़े और गन्दगी के ढ़ेर पर पड़ी हुई एक लावारिश लाश । जिस पर हर गली का कुत्ता पेशाब कर जाता है.... एक आदमी इतना विवश जीवन भी जी सकता है क्या ?" [४३]

" हिमस्नान हिमालय की ऊँचाइयों से होड लेता उनका निष्कलंक व्यक्तित्व- अपने परिवेश के लिए पूर्ण समर्पित - । और कहाँ मैं - अनेक-अनेक कुण्ठाओं विकृत आकांक्षाओं और लोभों से भरा हुआ पोखर ।"[४४]

६:२ शैली --

६:२:१ शैली का स्वरूप --

विश्व साहित्य में शैली की महत्ता की एक अखण्ड प्राचीन परम्परा है। संस्कृत विद्वानों ने शैली को 'रीति' कहा है। आचार्य वामन ने 'काव्यालंकार सूत्र' में 'रीति' का विश्लेषण करते हुये उसे 'विशिष्ट पद-रचना' कहा है। आधुनिक काल में इसे 'शैली' जो अंग्रेजी 'स्टाइल' का पर्याय मान लिया गया है। लक्षणा और व्यंजना के प्रयोगों द्वारा औचित्य का निर्वाह करने के कारण शैली को गरिमा प्राप्त होती है। प्रत्येक साहित्यकार प्रयत्नशील रहता है कि उसकी लेखन शैली में नवीनता और मौलिकता के साथ-साथ उसकी अपनी खास विशेषता भी है। सामान्य रूप से उपन्यास के वर्णन के अन्तर्गत परिगणित की जानेवाली सभी पध्दतियाँ शैलियाँ ही हो सकती है। अर्थात वर्णनात्मकता के जो विविध रूप है उतनी ही उपन्यास की शैलीयाँ हो सकती है। एक-सी शैली प्रयोग के कारण पाठकों के मन में ऊब,खीज तथा अरूचि पैदा होने का खतरा बना रहता है। बहुदा इसी को ध्यान में रखते हुए शुरु से आज तक युगीन आवश्यक्ताओं के अनुसार उपन्यास की शैली में विविध प्रकार के नए-नए प्रयोग किए गए है।

६:२:२ शैली के विविध प्रकार --

'प्रिय शबनम' में देवेश ठाकुर ने पत्र शैली के साथ अनेक शैलियों का प्रयोग अनुठे ढंग से किया है। और नवीन शैलियों को भी प्रचलित किया है। 'प्रिय शबनम' द्वारा लेखक ने उपन्यास जगत में एक नवीन प्रयोग किया सामाजिक वैषम्य की भूमिका पर सम्पूर्णत: पत्रशैली में लिखा हुआ सम्भवत: यह हिन्दी का प्रथम एवं अनूठा उपन्यास है। एक ही पत्र के रूप में लिखे इस उपन्यास में अन्य पध्दतियों का भी सार्थक उपयोग किया गया है। विश्लेषणात्मक,व्यंग्यात्मक, दृश्यात्मक,प्रतीकात्मक,निराधार प्रत्यक्षीकरण शैलियों ने इसके शिल्प को और अधिक आकर्षक बना दिया है। यही कारण है कि समूची कथा सश्लिष्ट एवं रोचक

ढंग से अपनी सम्पूर्णता के साथ अभिव्यक्त हुई है। ' प्रिय शबनम ' में निम्न लिखित शैलियों को प्रयुक्त किया गया है --

६:२:२:१ पत्रात्मक शैली --

' प्रिय शबनम ' पत्रात्मक शैली में लिखी हुई अपने ढंग की अनुठी रचना है। नायक मंगल द्वारा शबनम को सम्बोधित कर लम्बे पत्र के माध्यम से इसकी कथा अभिव्यक्त हुई है। इस शैली के उपयोग द्वारा लेखक ने मंगल के अन्तर्मन में चल रहे संघर्षों तथा उलझनों का सीधा साक्षात्कार कराया है। रचनाकार का उद्देश्य इस कृति के माध्यम से एक मध्यवर्गीय संस्कार में पले व्यक्ति की मनोग्रंथियों को दिखाना रहा है। इतना लम्बा पत्र होने के बावजूद इसमें एक रोचकता है, क्यों कि लेखक इस बात का ध्यान रखता है कि कहीं वह बहक न जाय। इसीलिए वह बार-बार पूछता है कि " मैं विषयान्तर कर गया हूँ, शबनम "[४५] या " मैं तुम्हें बोर कर रहा हूँ न, शबनम "[४६]

शबनम को सम्बोधित यह लम्बा पत्र उससे सम्बन्ध-विच्छेद होने के दस वर्ष बाद लिखा गया है, किन्तु दस वर्षों पहले की घटनाएँ भी इसमें चित्रित हुई है। इस लम्बी अवधि के अनेक प्रसंगों को एक सूत्र में बाँधने में लेखक सफल रहा है। मंगल का मन रह-रहकर अपने गाँव की ओर भटक जाता है। सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण यह प्रयोग पत्रशैली में सराहनीय है। इस शैली के उपयोग का ही यह परिणाम है कि लेखक मंगल का मानसिक उथल-पुथल और उसके अन्तर्मन की उलझने बड़ी ही सफलता से चित्रित कर सका है। पत्र शैली की यह विशेषता है कि पत्र-लेखक अपने मन की गूढ एवं रहस्यमयी बातों को भी बिना किसी दुराव छिपाव से अभिव्यक्त कर लेता है। मंगल भी पत्र इसीलिए लिखता है कि वह अपने मन को उथल-पुथल को व्यक्त करके अपनी मानसिक व्यग्रता से मुक्ति प्राप्त कर सके जिसे वह उपान्यासान्त में प्राप्त भी कर लेता है। मंगल के विचारों से पाठक अवगत होते हैं, किन्तु शबनम की भावनाओं और विचारों से वह अनभिज्ञ ही रह जाता है। मंगल भी पत्रान्त में कहता है -- " प्रिय शबनम ' तुम्हें और क्या लिखूँ। इतना

अधिक जो लिख गया है । लेकिन इतना लिखनेपर भी यह लग रहा है कि सब कुछ अपने बारे में ही कह दिया है मैंने - तुम्हारे लिए तो कुछ भी नहीं कहा ।" ४७

इस प्रकार प्रस्तुत शैली का प्रयोग कथा के अनुरूप लेखक का सही चुनाव है और लेखक अपने उद्देश्य मंगल के आत्ममंथन को चित्रित करने में सफल रहा है ।

६:२:२:२ विश्लेषणात्मक शैली --

पात्रों के चेतन या अचेतन विचारों की प्रक्रिया को अभिव्यक्ति देने का प्रयास उपन्यासकार इस शैली में करता है । इसके माध्यम से घटनाएँ, परिस्थितियाँ तथा पात्रों के मूल में स्थित कारण स्पष्ट हो जाते हैं किन्तु जहाँ इस शैली का प्रयोग मनोविज्ञान से अनुप्राणित होता है वहाँ यह शैली मनोवैज्ञानिक हो जाती है । देवेश ठाकुर के 'प्रिय शबनम' उपन्यास में इस शिल्पविधि का प्रयोग विविध रूपों में अत्यन्त ही व्यापक पैमानेपर हुआ है ।

आत्मविश्लेषण की प्रवृत्ति 'प्रिय शबनम' में अधिक मुखर हुई है । 'प्रिय शबनम' का मंगल आत्ममंथन करता हुआ चित्रित किया गया है । वह संस्कारों की जंजीरों में जकड़ा हुआ है । अपने संस्कारों से न उभर पाने एवं कुण्ठाग्रस्त होने के कारण ही वह शबनम को स्वीकार नहीं कर पाता । वह अपने भीतर अजीब तरह के द्वन्द्वों को उठते हुये महसूस करता है । इसीलिए वह सोचता है --"मैं जब-जब तुम्हारे सामने होता हमेशा अपने को तुम्हारे योग्य समझता और कभी भी हीनता का भाव मेरे मन में नहीं उपजता , तब मैं सोचता कि मैं हर तरह से तुम्हारे योग्य हूँ - मुझे लगता कि तुम्हें पाकर मैंने अपना भविष्य अपनी मुट्ठी में बाँध लिया है ।" ४८ तत्पश्चात वह यह भी सोचता है कि "तुम्हारे पास ऐसी किस चीज की कमी है जो तुम्हें दे पाऊँगा ... और तुम्हारे सहारे अपनी जिन्दगी को आसान बनाना इसमें अपनी हेठी मालूम होती थी ।" ४९

इन परिस्थितियों से जूझते हुये मंगल की मन:स्थिति अत्यन्त करुणा पूर्ण हो जाती है । वह सोचता है --"मेरे साथ हमेशा यह होता आया है कि मेरे

सुख की गली थोडी दूर आगे बढ़ने के बाद अँधेरे कोनों की ओर मुड़ जाया करती है।[५०] इस परिस्थिति से गुजरते हुये मँगल की आन्तरिक भावनाओं को विश्लेषित करने के लिए पत्रशैली भी विशेष उपयोगी रही है। स्पष्ट है कि 'प्रिय शबनम' में विश्लेषणात्मक शैली अत्यन्त ही प्रभावशाली ढँग से प्रयुक्त हुई है।

६:२:२:३ व्यंग्यात्मक शैली --

देवेश ठाकुर ने 'प्रिय शबनम' में विसंगतिपूर्ण समाज की विविधताओं से भरी जिन्दगी को सार्थक अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। इसीलिए भाषा में व्यंग्यात्मकता एवं पैनापन है। देवेश ठाकुर शोषितों एवं दलितों के हितो की रक्षा के लिए प्रतिबध्द रचनाकार है। वे उस व्यवस्था से कभी भी सहमत नहीं हो पाते जिसमें सामान्य जनता भ्रष्ट व्यवस्था का शिकार होकर उसके आँतक से पीड़ित हो, किसी तरह मात्र साँस ले रही है। अत: उनके इस उपन्यास में ऐसी व्यवस्था के प्रति आक्रोश प्रकट होना स्वाभाविक ही है। जैसे --"आम आदमी के दु:ख-सुखों की चिन्ता सिर्फ आम आदमी ही नहीं करता, दूसरे किसी दूसरे के काम आ सकनेवाले, सुविधाभोगी समझे जानेवाले लोग भी करते है और शायद वे ज्यादा अच्छी तरह से कर सकते है क्यों कि उनके पास साधन होते है, शक्ति होती है और स्त्रोत होते है। यहाँ मैं उन स्वार्थ-लोलुप, सुविधा की ताक में लगे लोगों की बात नहीं कर रहा हूँ, जो मन में कुटिलता को छिपाये रखते है और घात में रहते है कि कब आम आदमी को अपने षडयन्त्र का शिकार बनायें।" [५१]

दूसरा उदाहरण देखिए --"आराम हराम नहीं है। भले ही 'आराम हराम है' का नारा अपनी तुकबन्दी के कारण आकर्षित करता हो, लेकिन इसमें भावुकता ही ज्यादा है और भावुकता व्यवहार्थ नहीं होती। कोई भी आदमी आराम को हराम मानकर कितने दिन जिंदा रह सकता है।[५२]" देवेश ठाकुर मानते है कि भ्रष्ट व्यवस्था में सम्बन्धो की गाँठ मात्र पैसों के आधारपर जुड़ती है।

इस प्रकार 'प्रिय शबनम' उपन्यास में मध्यवर्गीय व्यक्ति की विडम्बनाओं के साथ-साथ भ्रष्ट एवं दूषित व्यवस्था को उकेरा गया है।

६:२:२:४ दृश्य-शैली --

दृश्य-शैली में छोटे-छोटे दृश्यों के माध्यम से वातावरण और पृष्ठभूमि के साथ-साथ पात्रों की रूपाकृति एवं कार्यों का सजीव चित्र खींचा जाता है। देवेश ठाकुर ने 'प्रिय शबनम' उपन्यास में इस शैली का कुशलतापूर्ण एवं सार्थक उपयोग किया है। उपन्यास की केन्द्र भूमि बम्बई रही है। किन्तु इसका प्रमुख पात्र मंगल पहाड़ी क्षेत्रों में प्राय: भटक जाता है, इसीलिए इसमें अनुपम प्रकृति दृश्य भी दृष्टिगत होते हैं -- " लैंसडाऊन - घास की हरी थाली पर सूरजमुखी के द्वीप सा लैंसडाऊन। बचपन के हमजोलियों के साथ कितनी ही बार गया था वहाँ। अभावों और उपेक्षाओं के बीच भी प्रकृति मुझे बड़ा सुख दे जाती थी। वर्षा की छाया में भीगी, नहाती हुई बनाली। सूरज के उगने से लेकर सूरज के डूबने तक लगातार बहने - वाली नदी। मौसम और समय के साथ-साथ बदलते हुए उसके रंग और आकार।[५३] फिर भी यह निर्विवाद है कि इन प्राकृतिक दृश्यों की योजना मात्र प्रकृति चित्रों के लिए नहीं बल्कि पात्रों की मनस्थिति को अजागर करनेवाले के रूपमें हुई है। मंगल के सामने फूलों का जंगल खड़ा रहना, शबनम एक तितली के रूप में वहाँ आकर फिर अपने वर्ग में निकल जाना आदि बातें मंगल की मनस्थिति को प्रकट करती है। प्रकृति सौन्दर्य के साथ नारी सौन्दर्य, व्यक्ति-चित्र तथा पात्रों के क्रियाकलाप दृश्य प्रभावशाली ढंग से चित्रित हुए हैं। उपन्यास में चित्रित ये दृश्य कहीं भी ऊबाऊ नहीं लगते। लेखक ने इन दृश्यों के साथ-साथ कथा को भी रोचक बनाने में समर्थ है। जैसे मंगल के माता-पिता घर छोड़ निकल जाने के बाद मंगल के सामने खड़े रहनेवाले दृश्य बहुत ही प्रभावशाली है -- " और मुझे बहुत-से दृश्य दीखने लगे, शबनम। प्लेटफार्म पर कुलियों के साथ सोजी अम्मा और पिताजी। रेल की पटरियों के किनारे कटी पड़ी दो लाशें। समुद्र के किनारे आकर लगे हुए दो फूले हुए शव। एक लम्बी सुनसान-सड़क और एक-दूसरे का हाथ-थामें घिसटते हुए दम्पति... किसी फुटपाथ पर पड़े हुए दो भूखे अर्धमृत शरीर।" [५४]

६:२:२:५ प्रतीकात्मक शैली --

' प्रिय शबनम ' में इस शैली का प्रयोग हुआ है । जिन भावों को प्रकट करने में लेखक को कठिणाई होती थी उन्हें सहज एवं प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए लेखक ने प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है । इस शैली के माध्यम से लेखकने पात्रों की मन:स्थितियों का उद्घाटन कर,महत्त्वपूर्ण घटनाओं को अभिव्यक्ति दी है । उपन्यास का नायक मंगल अपने जीवन में आनेवाले तूफान और जीवनपर पड़े निशानों की अभिव्यक्ति इन शब्दों में व्यक्त करता है --" ठीक है कि पिछले तूफान के निशान धरती पर शेष रह जाते हैं लेकिन व्यक्ति का पुरूषार्थ उन निशानों का साफ करता रहा है । जितना भी कलुष है, सब भूला जा सकता है,और सारे उबड़-खाबड़ को समतल कर उस पर एक नयी जिन्दगी बोयी जा सकती है ।"[५५] मंगल स्वयं के और शबनम के जीवन में आनेवाली लाजों और अमर घई के निशान की बात प्रतीकात्मक ढंग से कहता है ।

मंगल के जीवन में उच्चवर्ग की शबनम आती है परन्तु मंगल उसे दूसरे वर्ग की मानकर स्वीकार करने में निर्णय नहीं ले सकता । मंगल की धारणा है कि वह विशिष्ट वर्ग की होने के कारण उसके वर्ग में नहीं समा सकती । जैसे --" मैंने अपनी उंगलियों में एक तितली को ले लिया है । तभी वह तितली अपनी सतरंगी पाँखों को फडफडाती हुई मेरी अंगुली से फुदककर अपने वर्ग में जा मिली है और तब मुझे लगता दो प्रहर का सुख देकर वह सुख मुझे छोड़ गयी है । और मैं उसी फैली हुई घास पर खाली हाथ अकेला रह गया हूँ ।"[५६]

इस प्रकार देवेश ठाकुर के ' प्रिय शबनम ' उपन्यास में प्रतीकों की विविधता है । जिन्दगी के विविध रूपों को चित्रित करने के लिए लेखकने अलग अलग प्रतीकों का उपयोग किया है ।

६:२:२:६ निराधार प्रत्यक्षीकरण --

पात्रों के अवचेतन में स्थित भावनाओं एवं इच्छाओं की अभिव्यक्ति के लिए निराधार प्रत्यक्षीकरण (स्वप्न विश्लेषण) शैली का प्रयोग लेखक ने किया है । स्वप्नवत भ्रांति मंगल के मन में स्थित भावनाओं का ही प्रतिरूप है । मंगल की

मन:स्थिति को लेखक ने स्वप्न के माध्यम से अत्यन्त ही प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। मंगल ऐसी भ्रांति का शिकार हो जाता है कि शबनम के विवाह का निमंत्रण मिलनेपर वह पहले तो मनपर एक खराश-सी अनुभव करता है, किन्तु बाद में शबनम के सुखी जीवन के बारे में दिवास्वप्न देखने लगता है कि "एक बहुत लम्बा-चौड़ा चरगाह है - मीलों तक फैला हुआ। सीमाओं पर बर्फिली पहाड़िया है। आकाश में जाड़े के बादल है - रूई के गोलों से। और उस चरागाह के ऊपर तुम अमर के साथ उड रही हो - ऊँचे और बहुत ऊँचे। फिर तुम्हारा विमान एक बिन्दु - भर रह जाता है ... फिर वह बिन्दु भी ओझल होने लगता है - और उसी ओझल होते बिन्दु से आरम्भ होकर मेरे सामने आकाश में एक आलोक रेखा बनने लगती है। धीरे-धीरे उस आलोक - रेखा के पथ पर तुम दोनों चलते नजर आते हो। अमर, आगे बढ़ जाता है -- तुम पीछे रह जाती हो। तभी पथ अचानक बीच से टूट जाता है और तुम उस पार रह जाती हो। मैं देख रहा हूँ - तुम चिन्ताग्रस्त हो गयी हो। चाहती हो, पथ के छोर पर आकर एक छलाँग लगा लो। तुम तैयारी करती हो, तभी मेरा दिवास्वप्न टूट जाता है।" [५७] इस प्रकार भ्रांति का प्रत्यक्षीकरण मंगल के मन में शबनम के प्रति स्थित भावनाओं का ही परिणाम है। मंगल के मन में शबनम के प्रति दिवास्वप्न घुम जाते हैं, जैसे कोटद्वार का घर हवेली के रूप में बदलना, मंगल के माता-पिता घर से निकल जानेपर उनके मृत्यु के चित्र मंगल के सामने खड़े रहना आदि।

६:२:२:७ <u>आत्मकथात्मक शैली</u> --

आत्मकथात्मक शैली में लिखे गये उपन्यासों की कथा प्रथम पुरूष 'मैं' के माध्यम से विकसित होती है। उपन्यास का केन्द्र-बिन्दु 'मैं' होता है। इनमें घटनाओं की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्त्व दिया जाता है। और व्यक्ति-चरित्र भी दृश्यों के माध्यम से प्रस्तुत होता है। देवेश ठाकुर के 'प्रिय शबनम' उपन्यास का वस्तु गठन जीवनीपरक शैली में हुआ है। यह जीवनीपरकता आत्मकथात्मक ही प्रतीत होती है। यह शैली आत्मविश्लेषण एवं आत्मपरीक्षण की दृष्टिसे अत्यन्त ही अनुकूल होती है। 'प्रिय शबनम' का उद्देश्य भी एक मध्यवर्गीय युवक के अन्तर्मन

की गहराइयों में प्रविष्ट होकर उसे पूरी तरह से विस्तृत करना ही रहा है। मंगल के अन्तर्मन के संघर्ष के माध्यम से लेखक ने मध्यवर्गीय व्यक्ति के मन की उलझनों, विवशताओं एवं कमजोरियों को उकेरा है।

आत्मकथात्मक शैली मंगल के हृदय के उहापोह भावोन्दोलन एवं आत्म-विश्लेषण के लिए सर्वथा उपयुक्त शैली रही है। किन्तु इस शैली के माध्यम से लेखक शबनम के अन्तर्मन को नहीं खोल पाये है। इस तरह स्पष्ट है कि देवेश ठाकुर ने 'प्रिय शबनम' में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग भी अनेक रूपों में किया है।

६:२:२:८ पूर्व-दीप्ति शैली --

पूर्व-दीप्ति शैली में जीवन की घटनाओं का चित्रण वर्णनात्मक रूप में न होकर स्मृति-तरंगों के रूप में होता है। इसको अंग्रेजी में 'फ्लेश बैक' भी कहा जाता है। कथा जीवन के किसी उच्च, महत्त्वपूर्ण, विशिष्ट उद्दीप्त वर्तमान क्षण में कही जाती है। अत: जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षण में स्मृति तरंगों के माध्यम से अतीत की घटनाओं के अन्धकार को लिपिबध्द करके दीप्त किया जाता है।

'प्रिय शबनम' तो पूर्णत: स्मृत्यावलोकित उपन्यास है। नायक मंगल दस वर्षों के बाद शबनम से अचानक मिल जाता है। उस समय वह बहुत कुछ कहना चाहता है किन्तु कह नहीं पाता। अपने जीवन के इन महत्त्वपूर्ण क्षणों में वह शबनम को एक लम्बा पत्र लिखता है जिसमें पिछली घटनाएँ, स्मृत्यावलोकित हुई है। इसी कारण इनमें कोई निश्चित क्रम भी नहीं है। लेखक द्वारा इस शैली का प्रयोग निश्चित रूप में सार्थक रहा है।

६:२:२:९ नाट्य-शैली --

नाटकों जैसी प्रभाव की एकता एवं गति की तीव्रता लाने के लिए देवेश जी ने नाटकीय शैली का प्रयोग किया। इस शैली के माध्यम से उन्होंने अमूर्त भावों

एवं वस्तुओं को रूप और गति प्रदान करके उनमें तात्कालिकता का बोध कराया है। ' प्रिय शबनम ' का मंगल अपने कार्यों एवं कथनों द्वारा कहानी को आगे बढ़ाता है। इस शैली का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माध्यम संवाद है परन्तु देवेश जी ने उपन्यास के प्रमुख पात्र द्वारा ही कहानी प्रस्तुत करके कार्य व्यापार में नाटकीयता उत्पन्न कर दी है।

' प्रिय शबनम ' उपन्यास पत्र-शैली में लिखा है किन्तु लेखक ने इस उपन्यास में मंगल के क्रियाशील मस्तिष्क की हलचलों को नाटकीयकता प्रदान की है। पात्र पढ़ते समय तत्कालिकता का बोध होता है जो नाटक का अनिवार्य तत्त्व है। अत: इस तात्कालिकता के बोध द्वारा भी नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करने में लेखक सफल रहा है।

६:२:२:१० संवाद शैली --

देवेश ठाकुर ने ' प्रिय शबनम ' में संवादों का सफल एवं सार्थक उपयोग किया है। ये संवाद मुख्यत: वैयक्तिक पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित, समसामायिक सन्दर्भों से सम्पृक्त अथवा तात्विक चर्चावाले है। गार्हस्थिक संवादों में पारिवारिक समस्याओं, आपसी कलह, स्वभाव वैषम्य आदि विषयों से सम्बन्धित संवाद है। जैसे पारिवारिक में मंगल और उसकी माँ का वार्तालाप --" लेकिन जब मैंने उसे बहुत कोंचा तो बोली, ' लाजो तेरे साथ कब से रहती है ?"

मैं चुप रहा।

फिर वह बोली ' हमल तेरा है ? '

मैं फिर चुप रहा।

" तुझे पता है, मैंने उसे धर्म-बेटी बना रखा था ? '

" मैं बोला नहीं।

तुझे शरम नहीं आयी ? '

' लेकिन, अम्मा। मोहल्ले के रिश्ते .. तुम भी क्या पचड़ा ले बैठी।'

' चाहे मोहल्ले के हो, चाहे घर के जिसने जो रिश्ता मान लिया मान लिया।

तात्त्विक संवाद शम्भूदा और मंगल के बीच है किन्तु उनमें बोझिलता का अनुभव कम होता है क्यों कि वे मंगल के जीवन की परिस्थितियों के सन्दर्भ में विश्लेषित होते हैं। जैसे --

" जानता हूँ, लेकिन तुमसे आत्मीयता अनुभव करता हूँ न, इसलिए और आत्मीयता में भावना तो होती ही है। कहकर वह मुस्करा पड़े। सहसा, मेरे मुँह में निकल गया, तो क्या आप भी भावना में विश्वास करते हैं ? "

" मुझे यह लगता था कि तुम मुझे गलत समझते हो। भावना तो पत्थर में भी होती है। कोमलता और तरलता भी। पाषाणों के उदर में स्त्रोतस्विनी सोती है। पत्थरों पर चित्रित मूर्तियाँ कितनी भाव प्रवण होती है। कोणार्क का सूर्य-मन्दिर देखा है ? अजन्ता-ऐलोरा की गुफाएँ ...." [५९]

६:२:२:११ समय-विपर्यय शैली --

समय-विपर्यय शैली में विविध घटनाओं और वृत्तों को उनके काल क्रमानुसार प्रस्तुत नहीं किया जाता। इस शैली के उपन्यासों का आरम्भ कभी अन्तिम दृश्य या घटना से होता है, तो कभी मध्य से। पात्रों के चरित्र-विकास की गति को भी उलट-पुलट कर उपस्थित किया जाता है।

' प्रिय शबनम ' में इसका प्रयोग देवेश ठाकुरने प्रमुख रूप में किया है। दस वर्षों के अन्तराल के बाद अचानक एक दिन मंगल की मुलाकात वरसोवा के किनारे शबनम से हो जाती है जो अपने बेटे के साथ समुद्र तट पर घूमने आयी थी। इसी बिन्दू से दोनों पक्ष एक दूसरे की जिन्दगी के उस पक्ष से परिचित होते है, जहाँ से इन दोनों के रास्ते अलग हो गये थे। मंगल को ज्ञात होता है कि शबनम के पति स्वाड्डन लीडर अमर घई बंगला देश मुक्ति आंदोलन वाले युध्द के समय से ही लापता है और शबनम अपने बेटे के साथ पति का इन्तजार कर रही है। इस मुलाकात के बाद अपने अन्तर्द्वन्दों से मुक्ति पाने के लिए मंगल शबनम को एक लम्बा पत्र लिखता है, जिससे उसके अपने जीवन-संघर्ष के घटनाक्रम व्यक्त होते हैं। यही पत्र ' प्रिय शबनम ' उपन्यास है। इस प्रयास में घटनाओं का कोई निश्चित क्रम नही रह पाया

है। इस तरह इस उपन्यास की रचना अन्तिम बिंदू से आरम्भ होती है।

फिर भी धीरे-धीरे एक-एक घटना उजागर होती चलती है। मंगल के माता-पिता,उनका दाम्पत्य जीवन,पिता द्वारा माँ पर किये गये अत्याचार ,ये सब घटनाएँ मंगल के मन में अभावों से भरी जिन्दगी का अनुभव भर देती है। बहन सुषमा का पड़ोसी लड़के के साथ भाग जाना,लाजो से सम्बन्धित विविध घटनाएँ, उसका अपने पूर्वपति मूलचंद के यहाँ लौट जाना, शम्मूदा के जीवन की स्मृत्यावलोकित घटनाएँ,यह सब कुछ इस ढंग से वर्णित हुआ है कि इनमें कोई निश्चित क्रम नहीं है।

६:२:२:१२ सांकेतिक शैली --

सांकेतिक शैली में उपन्यास का दृश्य घटना अथवा परिस्थिति का विशद चित्र अंकित न करके कतिपय संकेतों के माध्यम से सुन्दर दृश्य प्रस्तुत करता है। देवेश ठाकुर ने ' प्रिय शबनम' में अनेक स्थलोंपर घटनाओं या परिस्थितियों को सांकेतिक शैली में चित्रित किया है।

' प्रिय शबनम' में शम्मूदा के पारिवारिक जीवन का विस्तृत वर्णन न देकर लेखक इतना ही संकेत करता है कि "कुछ पक्षियों के घोसले नहीं बनते। एक बिन्दु पर आकर वे बनाना भी नहीं चाहते एवं सोचने लगते हैं, सारा आकाश ही उनका है। सारी धरती ही उनकी है।" [६०]

६:३: निष्कर्ष --

' प्रिय शबनम ' की भाषा का अनुशीलन करनेपर यह स्पष्ट हो जाता है कि देवेश ठाकुर की भाषा विषय तथा कथा के अनुरूप है। शब्दों का प्रयोग पात्र और परिस्थिति के अनुकुल किया गया है। कुछ नये शब्दों का अन्वेषण भी हुआ है। इन शब्दों से जीवन के तनावों और विसंगतियों को सफल अभिव्यक्ति देने की सामर्थ्य है। सहायक क्रियाओं से रहित छोटे-छोटे सरल वाक्यों के प्रयोग के साथ-साथ इनकी भाषा में लयात्मकता,नाटकीयता,बिम्बात्मकता,चुटीलापन,पैनापन एवं

संवेदनशीलता भी प्रचुर मात्रा में व्याप्त है । अनुभव के मोती सूक्तियों के रूप में प्रयुक्त होकर भाषा को और अधिक सार्थक बना देते हैं । अनुभूति की तीव्रता को व्यक्त करने में लेखक सिध्द हस्त है । हिन्दी तथा अँग्रेजी या बम्बई में प्रचलित हिन्दी अँग्रेजी के शब्दों के विकृत रूपों को प्रयुक्त करने में लेखक को कोई झिझाक नहीं होती । कुछ विशिष्ट एवं अप्रचलित क्रिया प्रयोग भी मिलते हैं । भाषा में सहज प्रवाह,छोटे-छोटे वाक्य,बिखरे- टूटे वाक्य जिन्दगी के और टूटने को अभिव्यक्त करने में विशेष प्रभावशाली बन पड़े है ।

देवेश ठाकुर के 'प्रिय शबनम ' में विषय के अनुरूप विविध शैलियों का प्रयोग हुआ है । उपन्यास की कथा के विकास की बागडोर प्रमुख पात्र के हाथ में सौंप दी है । पत्र-शैली में लिखा हुआ यह उपन्यास,उपन्यास जगत में अपना एक नया स्थान प्राप्त करता है । एक ही पत्र के रूप में लिखे इस उपन्यास में अन्य पध्दतियों का भी सार्थक उपयोग किया गया है । पत्रात्मक,विश्लेषणात्मक , व्यंग्यात्मक,दृश्य,प्रतीकात्मक,निराधार-प्रत्यक्षीकरण,आत्मकथात्मक,पूर्व-दीप्ति, नाटय ,संवाद,समय-विपर्यय,संकेतिक आदि शैलियों ने इसके शिल्प सौन्दर्य को और अधिक आकर्षक बना दिया है । इसी कारण ही कथा संश्लिष्ट एवं रोचक ढँग से अभिव्यक्त हुई है । कुल मिलाकर डॉ.देवेश ठाकुर की भाषा में अपने कथा को सार्थक एवं प्रभावी रूप में सम्प्रेषित करने को सामर्थ्य है ।

सन्दर्भ --

१	देवेन्द्र ठाकुर	' प्रिय शबनम '	पृ.१३,७-७,१६,१९, २५,४१,४९,५५,७९ ।
२	वही	वही	पृ.२६,३८,५२ ।
३	वही	वही	पृ.६१,८१ ।
४	वही	वही	पृ.२८,५२,३४,५२ । ६१,६२,७२ ।
५	वही	वही	पृ.४२,६२,७७,७८ ।
६	वही	वही	पृ.१३-१४ ।
७	वही	वही	पृ.७,९,२५,६५ ।
८	वही	वही	पृ.१०,१९,२२,४९ ।
९	वही	वही	पृ.१०,१०,१०,१०, २१,१६,१०,८,१० ।
१०	वही	वही	पृ.१२२ ।
११	वही	वही	पृ.८१ ।
१२	वही	वही	पृ.७८,७८,५२ ।
१३	वही	वही	पृ.१३,१६,३२,३६, ४८,५४,६१,२६ ।
१४	वही	वही	पृ.२०,७२,५३ ।
१५	वही	वही	पृ.५१,५३ ।
१६	वही	वही	पृ.२०,१७,४९,७६, ६५ ।
१७	वही	वही	पृ.१८,२६,२९।
१८	वही	वही	पृ.३२,३२,६४,६५।
१९	वही	वही	पृ.६३ ।
२०	वही	वही	पृ.३२ ।

२१	देवेश ठाकुर	'प्रिय शबनम'	पृ.७७ ।
२२	वही	वही	पृ.७७ ।
२३	वही	वही	पृ.७७ ।
२४	वही	वही	पृ.२५ ।
२५	वही	वही	पृ.२० ।
२६	वही	वही	पृ.३८ ।
२७	वही	वही	पृ.६८ ।
२८	वही	वही	पृ.२८,६१,७२,१२ ।
२९	वही	वही	पृ.६१ ।
३०	वही	वही	पृ.२२ ।
३१	वही	वही	पृ.३२ ।
३२	वही	वही	पृ.२२ ।
३३	वही	वही	पृ.५९ ।
३४	वही	वही	पृ.६५ ।
३५	वही	वही	पृ.८२ ।
३६	वही	वही	पृ.२४ ।
३७	वही	वही	पृ.२८ ।
३८	वही	वही	पृ.३१ ।
३९	वही	वही	पृ.२७ ।
४०	वही	वही	पृ.७३
४१	वही	वही	पृ.२१ ।
४२	वही	वही	पृ.१८-१९ ।
४३	वही	वही	पृ.५४ ।
४४	वही	वही	पृ.५५ ।
४५	वही	वही	पृ.१२ ।
४६	वही	वही	पृ.१२ ।

४७	देवेश ठाकुर	'प्रिय शबनम'	पृ.८४ ।
४८	वही	वही	पृ.३५ ।
४९	वही	वही	पृ.२० ।
५०	वही	वही	पृ.३२ ।
५१	वही	वही	पृ.२५ ।
५२	वही	वही	पृ.२७ ।
५३	वही	वही	पृ.६३ ।
५४	वही	वही	पृ.७० ।
५५	वही	वही	पृ.८० ।
५६	वही	वही	पृ.३६ ।
५७	वही	वही	पृ.५६ ।
५८	वही	वही	पृ.५२ ।
५९	वही	वही	पृ.५० ।
६०	वही	वही	पृ.४७ ।